Abhi International Journal of
Humanities and Law
(A Peer Review Journal)
journal homepage: https://abhijournals.com/index.php/aijhl

Volume 2, Issue 3, July-Sept 2026 ISSN : 3107-6793

अपना मोर्चा उपन्यास में युवा वर्ग की संघर्षशील चेतना

सोमप्रीत कौर
एम.ए.हिंदी, गुरु काशी यूनिवर्सिटी, तलवंडी साबो, पंजाब
डॉ. राकेश कुमार सिंह
सह-प्राध्यापक, हिंदी विभाग,गुरु काशी यूनिवर्सिटी, तलवंडी साबो, पंजाब

ARTICLE INFO

Article History:
Received July 2, 2026
Revised July 6, 2026
Accepted July 10, 2026
Available online July 12, 2026

Keywords:
अपना मोर्चा ,
काशीनाथ सिंह ,
भाषा आंदोलन ,
बनारस हिंदू विश्वविद्यालय ,
छात्रसंघ,
पी॰ए॰सी ॰

Correspondence:
E-mail: awgamer2006@gmail.com

ABSTRACT

अपना मोर्चा उपन्यास काशीनाथ सिंह द्वारा लिखा गया है यह उपन्यास आंदोलनकारी होने के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक, और राजनीतिक समस्याओं को भी दर्शाता है अपना मोर्चा उपन्यास में बनारस की हिंदू विश्वविद्यालय और वहा के लोगों के जीवन पर निर्भर है हिंदू विश्वविद्यालय में छात्र कैसे अनेक समस्याओं का सामना करते हैं उनकी परीक्षाओं में बेईमानी और छात्रो के साथ पक्षपात आदि समस्याओं का बहुत सुंदर चित्रण किया गया है बी॰एच॰यू॰ के सभी छात्र एक साथ मिलकर ब्रिटिश शासन के विरुद्ध आंदोलन करते हैं जिसमें छात्रों पर बहुत से अत्याचार होते हैं नेता लोग आम जनता पर राजनीति के नाम पर अत्याचार करते हैं गरीब लोग कैसे शोषण का शिकार बन रहे हैं अपना मोर्चा उपन्यास में इन सभी समस्याओं को उजागर किया गया है।अपना मोर्चा में युवा वर्ग का सामाजिक और आर्थिक संघर्ष

अपना मोर्चा उपन्यास में युवा वर्ग के सामाजिक संघर्ष का सशक्त चित्रण किया गया है। उपन्यास में जाति, वर्ग, रंग और आर्थिक स्थिति के आधार पर लोगों के साथ भेदभाव किया जाता है। जिससे युवाओं में असंतोष और संघर्ष की भावना पैदा होती है।

भ्रष्टाचार: भ्रष्टाचार युवा वर्ग के सामने एक बड़ी समस्या के रूप में उभरता है। राजनीतिक नेता अपने स्वार्थ के लिए आम जनता का शोषण करते हैं तथा गरीब और मजदूर वर्ग को उनके अधिकारों से वंचित रखते हैं। मजदूरों को उनकी उचित मूल्य की आय नहीं दी जाती। और उन पर अत्याचार किए जाते हैं।

शिक्षा व्यवस्था: उपन्यास में Banaras Hindu University की शिक्षा व्यवस्था की कमियों को भी उजागर किया गया है। शिक्षा प्रणाली में व्याप्त अव्यवस्था, पक्षपात और अन्य समस्याओं के कारण छात्रों को अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इन परिस्थितियों के विरुद्ध युवा वर्ग संघर्ष करता है और अपने अधिकारों तथा सामाजिक न्याय की मांग करता है। इस प्रकार अपना मोर्चा उपन्यास युवा वर्ग के सामाजिक संघर्ष, जागरूकता और परिवर्तन की आकांक्षा को प्रती ढंग से प्रस्तुत करता है।

1.प्रस्तावना

काशीनाथ सिंह का अपना मोर्चा उपन्यास अन्दोलनकारी उपन्यास है। लेकिन इसमें सामाजिक, आर्थिक , राजनीति आदि समस्याओं का भी बहुत सुंदर चित्रण किया गया है यह उपन्यास बनारस की हिंदू विश्वविद्यालय की शिक्षा व्यवस्था और बनारस के लोगों के जीवन पर निर्भर है हिंदू विश्वविद्यालय के

छात्र कैसे अनेक समस्याओं का सामना करते हैं कैसे उनकी परीक्षा में हेराफेरी होती है विश्वविद्यालय के छात्र लोग ब्रिटिश भाषा का विरोध करते हैं वह फैसला करते हैं कि वह अंग्रेजी भाषा के विरुद्ध आंदोलन शुरू करेंगे। जब हमारा देश ब्रिटिश शासन से मुक्त हो चुका है तो उनकी भाषा से क्यों नहीं मुक्त । वह चाहते हैं कि हमारे देश में हमारी अपनी भाषा होनी चाहिए हिंदी भाषा के प्रति सम्मान की भावना दिखाते हुए वह आंदोलन शुरू करते हैं जुलूस शुरू होता है। छात्रों का इतना बड़ा जुलूस कभी नहीं देखा था। इतना भयानक तीन सौ से भी अधिक मुट्ठियाँ एक साथ आसमान की ओर उठ रही थी। लेकिन इतना बड़ा जुलूस सरकार के लिए चुनौती का कार्य कर रहा था। छात्रो पर पी॰ए॰सी॰ के जवान हमला कर देते है। अचानक से आंसू गैस के गोले गिरने लगते हैं। यह आंसू गैस के गोले लड़कों ने पहले कभी नहीं देखे थे। लड़के बेहोश होने लगते हैं। पुलिस के जवान छात्रों पर लाठीचार्ज करना शुरू कर देते हैं। बहुत से लड़के घायल होते हैं और उनका आंदोलन असफल रह जाता है। अगले दिन अखबार में अफवाहें फैलती हैं। इतने लड़कों को जेल भेज दिया गया है, इतने घायल हैं सभी छात्र अपनी हार को लेकर खामोश हैं। वह कहते हैं कि पाँच डाकघरो पर आग से हमला करेंगे। लेकिन वहां पर पहले से ही पुलिस का पहरा है। सभी छात्र परेशान हैं। अपनी खामोशी लेकर एक मैदान में जाकर बैठते हैं। वहीं पर एक छोटा लड़का आता है, शायद बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय में ही पढ़ता है। वह माइक में बोलता है साथियों। यह शब्द मैदान में बैठे लड़कों के लिए नया नहीं था। लेकिन फिर भी यह सुनकर सभी के कान खड़े हो जाते हैं। वह लड़का फिर बोलता है साथियों, यह तीन बार बोलता है और नीचे गुटनो के बल बैठकर रोने लगता है। वहीं बैठा युवा लड़के के पास जाता है उसे कॉलर से पकड़कर खड़ा करता है और बोलता है अरे छोकरे लड़कियों की तरह रो क्यों रहा है। युवा माइक में बोलता है साथियों मैं गरीब हूँ। नेता नहीं आप चाहे तो मुझ पर विश्वास कर सकते है। वह कहता हैं। हम आपने हक के लिए लड़ाई करगे । और वह मैदान में बैठे लड़कों को फिर से अपने हक के लिए लड़ने को उत्साहित करता है। सभी छात्र फिर से आंदोलन के लिए तैयार होते हैं और अब वह पूरी तैयारी से आंदोलन शुरू करते हैं और सफल भी होते हैं। छात्र खुश होते हैं, यह खुशी उनके चेहरे पर बहुत समय के बाद देखने को मिलती है लेकिन अगले ही दिन अखबार में खबर आती है कि अनिश्चित समय के लिए विश्वविद्यालय बंद कर दी गई है। छात्रों को 24 घंटों के अन्दर छात्रावास खाली करने के लिए बोल दिया गया है। सड़क पूरी तरह खाली है, कोई साधन नहीं ना ही कोई रिक्शा दिख रहा है छात्र अपना सामान लेकर घर को वापस जा रहे हैं।

2.उदेश्य : काशीनाथ सिंह का अपना मोर्चा उपन्यास निम्नलिखित उद्देश्य को लेकर लिखा गया है

1. **छात्रों की एकता का सुंदर चित्रण**

बी॰एच॰यू॰ के छात्र एक साथ मिलकर अपने हक के लिए लड़ते हैं अपने देश की भाषा के सम्मान के लिए लड़ते हैं और अपने एकता को दिखाते हैं।

2. **छात्रों की समस्याओं को उजागर करना**

अपना मोर्चा उपन्यास का मुख्य उद्देश्य छात्रों की समस्याओं को उजागर करना है बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के छात्र बहुत सी समस्याओं का सामना कर रहे हैं उनकी परीक्षाओं में बेईमानी होती है।

छात्र के बीच भेदभाव किया जाता है। छात्रों की किसी भी बात पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता और आंदोलन में उन पर अत्याचार होते हैं।

3. बी.एच.यू. की शिक्षा व्यवस्था का वर्णन

बनारस हिंदू विश्वविद्यालय की शिक्षा व्यवस्था का वर्णन बहुत अच्छे से किया गया है विश्वविद्यालय में छात्र ब्रिटिश भाषा का विरोध करते हैं छात्र अंग्रेजी भाषा को पढ़ना पसंद नहीं करते वह कहते हैं कि जब हमारा देश ब्रिटिश शासन से मुक्त हो चुका है तो उनकी भाषा से क्यों नहीं। छात्र ब्रिटिश भाषा के खिलाफ आंदोलन करते हैं

4. राजनीतिक भ्रष्टाचार

अपना मोर्चा उपन्यास आंदोलनकारी होने के साथ साथ राजनीतिक भ्रष्टाचार के प्रति पाठको को जागरूक करना भी मुख्य उद्देश्य रहा है कैसे राजनीति के नाम पर आम जनता पर अत्याचार होते हैं गरीब लोगों को शोषण का शिकार बनाया जाता है।

5. आर्थिक समस्या का वर्णन

अपना मोर्चा उपन्यास में आर्थिक समस्या को पाठकों के सामने दर्शाया गया है कैसे पढ़े-लिखे लोग बेरोजगार हैं इंसान के पास करने को काम नहीं ऊपर से बढ़ती महंगाई बहुत बड़ी आर्थिक समस्या है।

6. भाषा आंदोलन का महत्व

अपना मोर्चा उपन्यास में अंग्रेजी भाषा के विरुद्ध आंदोलन को दर्शाया गया है बी.एच.यू. के छात्रों की हिंदी भाषा के प्रति सम्मान की भावना दिखाई गई है। सभी छात्र एक साथ मिलकर अपने देश की भाषा के लिए संघर्ष करते हैं। और विदेशी भाषा के खिलाफ आवाज उठाते हैं।

3.विचारविमर्श:

हिंदी के कथा साहित्य में काशीनाथ सिंह का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आधुनिक युग की बदलती सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक परिस्थितियों ने हिंदी साहित्य को भी प्रभावित किया है। काशीनाथ सिंह ने अपनी विविध रचनाओं के माध्यम से इन परिवर्तनों को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त किया है। उन्होंने अनेक उपन्यास, कहानियाँ तथा निबंध लिखकर हिंदी कथा साहित्य में विशिष्ट स्थान प्राप्त किया। उनकी रचनाओं में आम जनजीवन, सामाजिक विसंगतियाँ, छात्र आंदोलन, राजनीतिक भ्रष्टाचार तथा मानवीय संवेदनाओं का यथार्थ चित्रण मिलता है। अपनी सशक्त भाषा-शैली और यथार्थवादी दृष्टिकोण के कारण काशीनाथ सिंह हिंदी साहित्य के प्रमुख कथाकारों में गिने जाते हैं।"काशीनाथ सिंह को हिंदी साहित्य की प्रेरणा अपने परिवार से ही प्राप्त हुई। उनके बड़े भाई नामवर सिंह हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध आलोचक और विद्वान थे। माता जी भी उनकी उनको बचपन में लोककथाएँ और कहानियाँ सुनाया करती थीं, जिससे वह अधिक प्रभावित हुए और हिंदी साहित्य में उनकी रुचि बढ़ी। उन्होंने अपने समय में बहुत से निबंध, उपन्यास और कहानियाँ लिखी जिसमें आम आदमी

का जीवन संघर्ष, छात्र और मजदूर वर्ग को आधार मानकर ही लिखा गया। इनके रचनाओं में बनारस का भी प्रभाव अधिक दिखाई देता है।

काशीनाथ सिंह की रचनाओं की प्रमुख विशेषताएँ काशीनाथ सिंह ने अपने रचनाओं को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सभी पक्षों की समस्याओं को आधार मानकर लिखा। इन्होंने पाठकों को सभी पक्षों से प्रभावित किया है। अपना मोर्चा उपन्यास में राजनीतिक भ्रष्टाचार, आर्थिक समस्या युवा वर्ग के जीवन का संघर्ष आदि सभी समस्याओं का बहुत सुंदर चित्रण किया है।

यथार्थवादी चित्रण

इन्होंने अपनी रचनाओं में आधुनिक युग की वास्तविक समस्याओं को पाठकों के सामने प्रस्तुत किया। वर्तमान युग में व्यक्ति असल जीवन में किन-किन समस्याओं का सामना कर रहा है, समाज में लोग कैसे संघर्ष कर रहे हैं इन्होंने वास्तविक रूप से प्रस्तुत किया

लोकजीवन का सशक्त चित्रण

काशीनाथ सिंह ने अपनी रचनाओं में बनारस के लोगों के जीवन का बहुत सुंदर चित्रण किया है उनके रीति-रिवाज कैसे हैं, उनकी बोलचाल उनकी बोली लोगों के आपसी संबंध काशी की असी और आदि रचनाओं में बनारस का बहुत सुंदर चित्रण किया है।

आम आदमी का पक्षधार

इन्होंने अपनी रचनाओं में आम आदमी का पक्ष लेकर लिखा उनकी रचनाओं में छात्र, मजदूर, और संघर्षशील वर्ग आधार मानकर उनकी समस्याओ प्रस्तुत किय।

हास्य और व्यंग्य का समावेश उन्होंने अपने रचनाओं में सामाजिक और राजनीतिक विसंगतियों पर तीखा व्यंग्य किया है हास्य और व्यंग्य के माध्यम से वे गंभीर विषय को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करते हैं।

आम बोलचाल की भाषा

काशीनाथ सिंह ने अपनी रचनाओं में सरल सहज और आम बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया है ताकि पाठकों आसानी से समझ सके ।

4.निष्कर्ष

काशीनाथ सिंह का अपना मोर्चा उपन्यास आंदोलनकारी होने के साथ-साथ राजनीतिक , सामाजिक , आर्थिक , समस्याओं को भी दर्शाता है इस उपन्यास में बनारस की हिंदू विश्वविद्यालय के छात्रों के संघर्ष का बहुत सुंदर चित्रण किया गया है विश्वविद्यालय का शिक्षा व्यवस्था अच्छा न होने के कारण छात्रों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है छात्रों की आवाज को दबाया जाता है लेकिन छात्रों की एकता समाज के लिए पहचान बनती है वह लड़ते हैं अपने हक के लिए अपनी हिंदी भाषा के सम्मान के लिए

वह आवाज उठाते हैं। वह अपने आस-पास के लोगों को भी अपने हक के लिए लड़ने के लिए जागृत करते हैं

अत्यंत: अपना मोर्चा उपन्यास समाजिक, राजनीतिक, आर्थिक आदि सभी पक्षों से पाठकों को जागृत करता हैं।

5.संदर्भ सूची

1. द्विवेदी हजारीप्रसाद। हिंदी साहित्य की भूमिका। राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली। 2019
2. वर्मा, रामचंद्र। हिंदी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास लोकभारती प्रकाशन प्रयागराज।
3. शर्मा, रामविलास । हिंदी साहित्य और समाज। राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली ।
4. सिंह , काशीनाथ। अपना मोर्चा। राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली , नवीनतम संस्करण । 2024 (पृष्ठ न: 13 -120)

   पृष्ठ नः (13)

   पृष्ठ नः (14)

   पृष्ठ नः (15)

   पृष्ठ नः (16)

   पृष्ठ नः (17)

   पृष्ठ नः (18)

   पृष्ठ नः (19-20-21)

   पृष्ठ नः (22-23-24)

5. सिंहल शशिभूषण । हिंदी उपन्यास की प्रवृत्तियां । प्रेम प्रकाशन मन्दिर, दिल्ली 2014। (पृष्ठ नः 23-45)

   पृष्ठ नः (23)

   पृष्ठ नः (27 - 29)

   पृष्ठ नः (33 – 42)

   पृष्ठ नः (43-45)